Vol 6 Issue 2 March 2016

ISSN No : 2230-7850

International Multidisciplinary Research Journal

Indian Streams Research Journal

Executive Editor
Ashok Yakkaldevi

Editor-in-Chief
H.N.Jagtap

Welcome to ISRJ

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2230-7850**

Indian Streams Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Regional Editor

Manichander Thammishetty
Ph.d Research Scholar, Faculty of Education IASE, Osmania University, Hyderabad.

Mr. Dikonda Govardhan Krushanahari
Professor and Researcher ,
Rayat shikshan sanstha's, Rajarshi Chhatrapati Shahu College, Kolhapur.

International Advisory Board

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

.....More

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.isrj.org

Indian Streams Research Journal

International Recognized Multidisciplinary Research Journal

ISSN: 2230-7850 Impact Factor : 4.1625(UIF) Volume - 6 | Issue - 2 | March - 2016

गाँधी चिंतन में पर्यावरण चेतना

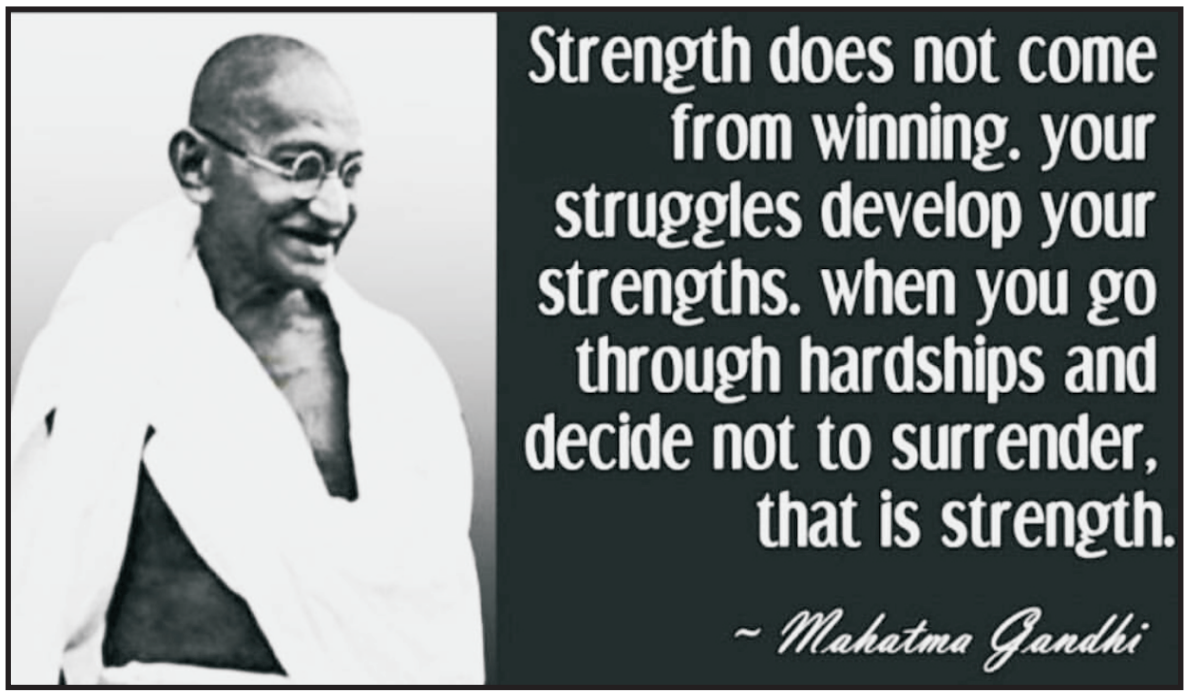

तेजराम सिंह[1] , हिमांशु बौड़ाई[2]

[1]शोध छात्र, राजनीति विज्ञान विभाग, हे.न.ब.ग.केन्द्रीय विश्वविद्यालय, श्रीनगर गढ़वाल, उत्तराखण्ड।

[2]प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग, हे.न.ब.ग. केन्द्रीय विश्वविद्यालय, श्रीनगर गढ़वाल, उत्तराखण्ड।

सारांश

गाँधी चिन्तन समावेशी विकास का साहित्य है। गाँधी सतत् विकास के लिए अहिंसा एवं पवित्र साधनों पर बल देते है। उनका मानना था 'जैसा साधन वैसा साध्य' ही समग्र विकास का मूल्य है। गाँधी का विकास से तात्पर्य वस्तुओं का विकास नहीं अपितु मनुष्यों का विकास है। मनुष्य एवं मनुष्येत्तर दोनों का विकास है। यह तभी हो सकता है जब प्राकृतिक संसाधनों का अनुचित दोहन न हो रहा हो। गाँधी मनुष्य जीवन के साथ–साथ समस्त प्राकृतिक जगत की चिन्ता करते हैं। उन्हें विकास के स्त्रोतों के अस्तित्व की चिन्ता है। गाँधी पारम्परिक भारतीय चिंतन की तरह समस्त प्रकृति को पूज्य मानते हैं। गाँधी का सादा जीवन भी पर्यावरण चेतना की अभिव्यक्ति है। मनुष्य प्रकृति का सूक्ष्म अंश है यदि वह इसके विधान को नहीं मानेगा, तो यह मानव को दण्डित करेगी और किया है। गाँधी का चिन्तन इस दृष्टि से प्रकृति विधान का नैतिक दस्तावेज है। जिसमें सामाजिक एवं पर्यावरणीय चेतना का स्पष्ट उल्लेख है।

बीज शब्द – सर्वोदय, सतत् विकास, पर्यावरण हितैषी, नैतिकता, न्यासिता, श्रम, स्वदेशी, ग्रामोद्योग, पवित्र साधन।

प्रस्तावना :

गाँधी का चिन्तन परम्परावादी एवं समग्रता का दर्शन है। परम्परावाद का सीधा अर्थ प्राचीन भारतीय दृष्टिकोण से है। प्राचीन भारतीय परम्पराओं में समग्रता का चिन्तन भी समाया हुआ है। समग्रता का अर्थ है जीवन के विभिन्न पक्षों को लेते हुए विचार करना। पर्यावरण में प्रकृति के साथ मनुष्य,पशु पक्षी कीड़े–मकोड़े व्यक्ति, समाज और समाज में भी आर्थिक, नैतिक, राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक आध्यात्मिक और आध्यात्मिक में भी लौकिक तथा पारलौकिक सभी पक्ष समाहित है। मनुष्य का भौतिक जीवन प्राकृतिक पर्यावरण से पोषित है। गाँधी प्राकृतिक आयाम की दृष्टि से कहते है कि प्राकृतिक पर्यावरण से अलग होकर जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती। भारतीय परम्परा में प्रकृति की पूजा जैसे–पृथ्वी, सूर्य, उषा, इन्द्र, वरूण आदि को वेदों में महत्व दिया गया है। इसी परम्परा को गाँधी ने भी निर्वाह किया है और प्राकृतिक जगत को मनुष्य के जीवन से अलग नहीं माना है। गाँधी की दृष्टि में प्राकृतिक पर्यावरण का सन्तुलन बना रहना चाहिये ताकि मानव के जीवन का विकास हो सके। प्रकृति का शोषण करके मनुष्य का विकास सम्भव नहीं है।[1] गाँधी की यह धारणा है कि मनुष्य प्रकृति से विद्रोह करके नहीं रह सकता है। उनका यह दृष्टिकोण पाश्चात्य पूँजीवादी दृष्टिकोण से भिन्न है। गाँधी के अनुसार 'प्रकृति से प्रेम' करना ही पर्याप्त नहीं है। प्रकृति तो पूजनीय है। भारतीय परम्परा में सर्वेश्वरवाद यही सिद्ध करता है। इस सिद्धान्त के अनुसार प्रकृति और मनुष्य सभी कुछ ईश्वर है और ईश्वर ही प्रकृति और मनुष्य रूप हैं। ''ईश्वर अन्न है, ईश्वर औषधि अर्थात् वनस्पतियाँ है। मन्त्र, घृत, अग्नि और हवन रूप क्रिया भी ईश्वर ही है। ईश्वर को ही इस जगत का पोषण करने वाला धाता, पिता, माता और पितामह कहा गया है और वही ईश्वर सूर्य रूप में तपता है और वही वर्षा का आकर्षण करता है और वर्षाता है।''[2] गाँधी इसी सर्वात्मभाव को महत्व देते हुये कहते है ''मनुष्य का भौतिक शरीर पृथ्वी, पानी, आकाश, अग्नि और वायु नाम के पाँच तत्वों से बना है, जो पंच महाभूत कहलाते हैं। इनमें अग्नि तत्व शरीर को शक्ति पहुँचाता है। आत्मा उसको चैतन्य प्रदान करती है।''[3]

प्रकृति से जीवन की रक्षा होती है। अतः इसकी पूजा करना हमारा प्राथमिक कार्य है। भारतीय परम्परा में प्रकृति से केवल मैत्री भाव (म्बव.थ्तपमदकसल) रखना ही पर्याप्त नहीं माना गया है वरन् इसकी पूजा अपेक्षित है। इसी पूजा की बात गाँधी करते हैं। उनका कहना है– ''वृक्ष–पूजा का अर्थ वनस्पति मात्र की पूजा है। वनस्पति में जो अद्‌भुत सौन्दर्य भरा पड़ा है, उससे हमें ईश्वर की महिमा का ज्ञान होता है। वनस्पति के बिना हम एक क्षण भी जी नहीं सकते। जिस देश में वृक्षादि की कमी होती है, वहाँ की वृक्ष–पूजा में गम्भीर अर्थशास्त्र निहित होता है।''[4]

गाँधी पर्यावरण सन्तुलन की दृष्टि से उपभोगतावादी संस्कृति का विरोध करते है। वे प्राकृतिक चीजों का उचित एवं संतुलित प्रयोग चाहते थे। उनके अनुसार प्रकृति का अनुचित दोहन बीमारी, बेरोजगारी, गरीबी, भुखमरी का कारण बन जाता है। गाँधी का मानना है कि पूँजीवाद, उपभोगवाद, यन्त्रवाद, भौतिकवाद के प्रसार से पर्यावरण सम्बन्धी भयंकर समस्याएँ उत्पन्न होती है। जिनमें पृथ्वी पर मानव जाति के अस्तित्व बच पाने का संकट आ सकता है। आवश्यकताओं की वृद्धि और भोग विलास की सामग्री जुटाने तथा आगे बढ़ते जाने की प्रवृत्ति पर नियन्त्रण करते रहने के दर्शन पर विचार करते समय उन्होंने सबसे अधिक जोर सादा जीवन, उच्च विचार पर दिया है।''[5]

गाँधी चिन्तन के परिप्रेक्ष्य में उनकी पर्यावरणीय चेतना के प्रमुख तत्वों का विवरण इस प्रकार दिया जा सकता है–

1. गाँधी दृष्टि में विकास एवं पर्यावरणः महात्मा गाँधी के चिंतन में समग्र जीवन एवं सम्पूर्ण विश्व की चिंता है। उन्होंने न केवल मनुष्य बल्कि समस्त जीव–जन्तु, पशु–पक्षी, प्रकृति–पर्यावरण आदि के बीच मानव जीवन की समरसता या सामंजस्य स्थापित करने वाली दृष्टि विकसित की थी।[6] अपनी कालजयी पुस्तक 'हिन्द स्वराज' में उन्होंने जिस समाज–व्यवस्था की रूपरेखा प्रस्तुत की है, उसमें पर्यावरण संरक्षण और नैतिकता के तत्व भरे पड़े है। गाँधी कहते हैं, ''सभ्यता वह आचरण है, जिसमें आदमी अपना फर्ज अदा करता है, फर्ज अदा करने का अर्थ है, नीति का पालन करना और नीति के पालन का अर्थ है अपने मन और इन्द्रियों को बस में रखना। ऐसा करते हुये हम अपने को पहचानते हैं। यही सभ्यता है।''[7] गाँधी का यह विचार पर्यावरण संरक्षण की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। क्योंकि, पर्यावरण प्रदूषण की समस्या मुख्यतः मनुष्य के अनियंत्रित भोग–विलास एवं अनैतिक जीवन–पद्धति का ही परिणाम है।

गाँधी का विकास का सिद्धान्त समग्र विकास का सिद्धान्त है। इस सिद्धान्त के अनुसार, प्रकृति, नैतिकता और अर्थ में अटूट और गहरा सम्बन्ध है। इसके अन्तर्गत केवल औद्योगिक विकास नहीं है, बल्कि ऐसी विकास की अवधारणा निहित हैं, जो दीर्घकालीन व शाश्वत है। यह ऐसा विकास है, जो मानवीय आवश्यकताओं की सन्तुष्टि के साथ–साथ पर्यावरण तथा प्राकृतिक सम्पदा का संरक्षण कर सके। इस प्रकार आज समस्या मानव और प्रकृति के मध्य सामंजस्य की है, इस सन्दर्भ में गाँधी का आर्थिक चिन्तन अनुकरणीय है।[8]

गाँधी प्राकृतिक जीवन जीने का मशविरा देते हैं, वे प्रकृति के शोषण को पाप मानते थे। ''गाँधी ने बिहार में 1934 में भूकम्प की भयावह स्थिति को देखकर कहा था कि मनुष्य प्रकृति का शोषण बन्द करें अन्यथा प्रकृति के प्रकोप का स्वरूप इसी तरह भीषण होगा। पृथ्वी के अन्दर से पानी, लोहा, कोयला, सोना, चाँदी आदि खनिज पदार्थों को जरूरत से अधिक निकालकर पृथ्वी को खोखला बना रहे हैं। साथ ही पर्वतों से, वृक्षों से पृथ्वी को नंगा कर रहे हैं। इससे ऑक्सीजन का अभाव तो होगा ही साथ ही वर्षा से नदियाँ सारी मिट्टी, समुद्र में ले जायेगी और समुद्र ऊँचा होगा, पृथ्वी दबेगी तो भूकम्प आयेगा, जल प्लावन होगा और प्रलय होगा।''[9] इसका तात्पर्य यह है कि प्राकृतिक पर्यावरण और उसके संरक्षण के आधार पर ही जो विकास होगा। वह सन्तुलित और सुस्थिर होगा।

2. लघु एवं कुटीर उद्योग का दर्शन एक पर्यावरण चिन्ताः गाँधी उद्योगवाद एवं यन्त्रवाद के विरोधी थे। इस सम्बन्ध में वे कहते हैं, ''यन्त्रों के पीछे पागलपन पर मेरी आपत्ति है, यन्त्रों के प्रति नहीं। मशीनीकरण से श्रम एवं रोजगार की समस्या आ जाती है। समाज में गरीबी एवं असमानता फैलती है जिससे सामाजिक पर्यावरण पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। इन्हीं बातों के विरूद्ध में संघर्ष कर रहा हूँ।''[10]

गाँधी बड़े–बड़े कारखानों में विपुल मात्रा में माल पैदा करने की बजाय देश के विशाल जनसमुदायों द्वारा अपने घरों और झोपड़ो में माल का उत्पादन करने के पक्षधर थे।[11] गाँधी ने कुटीर उद्योग एवं स्वावलम्बन पर बल दिया था। कुटीर उद्योग जहाँ एक ओर स्वावलम्बन को

बढ़ावा देते है, वहीं वे बहुत कम प्रदूषण पैदा करते हैं। कुटीर उद्योगों को अगर प्रोत्साहित किया जाय, तो प्राकृतिक संसाधनों का अति दोहन तो रूकेगा ही, पर्यावरण संरक्षण भी होगा। आज बड़े–बड़े कल–कारखाने और बड़े–बड़े उद्योग बहुत प्रदूषण पैदा कर रहे हैं और फैला रहे हैं, उससे पर्यावरण को अपार हानि हो रही है। गाँधी के शब्दों में, ''बड़े पैमाने पर होने वाले सामूहिक उत्पादन ही दुनिया की मौजूदा संकटमय स्थिति के लिए जिम्मेदार है। एक क्षण के लिए यदि मान भी लिया जाय कि यंत्र मानव–समाज की सारी आवश्यकताएँ पूरी कर सकते हैं, तो भी उसका यह परिणाम तो होगा ही कि उत्पादन कुछ विशिष्ट क्षेत्रों में केन्द्रित हो जायेगा और वितरण की योजना के लिए हमें अतिरिक्त प्रयास करना पड़ेगा। दूसरी ओर यदि जिन क्षेत्रों में वस्तुओं की आवश्यकता हैं, वहीं उनका उत्पादन हो, वहीं वितरण हो। तो वितरण का नियंतत्रण अपने आप हो जाता है। जब उत्पादन और उपभोग दोनों स्थानीय बन जाते हैं तब अनिश्चित मात्रा में और किसी भी मूल्य पर उत्पादन की गति बढ़ाना बंद हो जाता है।''[12] स्पष्ट है उनके इस दर्शन में पर्यावरण चेतना निहित है।

3. अपरिग्रह सिद्धान्त का परिप्रेक्ष्य एवं पर्यावरण जागरूकताः गाँधी का कहना है कि 'प्रकृति के पास मनुष्य को देने के लिये बहुत कुछ है, वह प्रत्येक मनुष्य की आवश्यक आवश्यकताओं को पूरा कर सकती है लेकिन वह उनके लालच को कभी पूरा नहीं कर सकती, लालच की सीमा नहीं है। अपरिग्रह से तात्पर्य है आवश्यकताओं से अधिक संग्रह न करना। जब मनुष्य आवश्यकता से अधिक धन वस्तुएँ संग्रह करता है तो समाज में विषमता तथा पर्यावरण में असन्तुलन पैदा होता है। अपरिग्रह की दृष्टि ही प्राकृतिक जीवन शैली का सूत्र है।''[13] गाँधी का यह चिन्तन सामाजिक एवं पर्यावरण सन्तुलन का द्योतक है।

4. न्यासिता सिद्धान्त में पर्यावरण चेतनाः 'ट्रस्टीशिप' की गाँधी की धारणा उन्हें ईशोपनिषद् से बीज रूप में मिली है जिसका आधार यह है कि त्याग द्वारा संसार की वस्तुओं का उपभोग करना श्रेयस्कर है। ईशोपनिषद् के प्रथम श्लोक का अर्थ है इस ब्रह्माण्ड में जो कुछ भी है उस सब में ईश्वर व्याप्त है। त्याग के द्वारा माँग करो। दूसरे के धन पर दृष्टि न रखो। इस बीज रूपी धारणा को उन्होंने सामाजिक जीवन में लागू किया। गाँधी जी का कथन है कि समाज में धनी लोगों के पास जो धन है वह उनके उपभोग की वस्तु नहीं है। धन एक सामाजिक धरोहर है धनी व्यक्ति उसका ट्रस्टी रहेगा।[14]

गाँधी का यह विचार पूँजीवाद, उपभोक्तावाद, स्वार्थवाद एवं भौतिकवाद का खण्डन करता है। उनका न्यासी विचार आध्यात्मवाद, परार्थवाद, मानवतावाद, अहिंसक समाज एवं सुस्थिर विकास का समर्थन करता है। उनका यह सिद्धान्त जो जीवन पद्धति प्रस्तुत करता है उससे पर्यावरण नुकसान की सम्भावना प्रकट नहीं होती।

5. शारीरिक श्रम और पर्यावरणः रस्किन, टॉलस्टाय एवं बोन्डारेफ से गाँधी ने यह मंत्र सीखा कि मनुष्य को जीवित रहने के लिए कठोर परिश्रम करना चाहिये। अपनी रोटी को उसे अपने पसीने से कमाना चाहिये। गाँधी का कहना है कि नियम यह होना चाहिये कि 'मेहनत नहीं तो खाना नहीं।' गाँधी से पूर्व बाईबिल भी यही कहती है, 'तुझे पसीना बहाने पर ही रोटी मिलेगी।'[15]

गाँधी का विश्वास है की श्रम पर जितना बल दिया जाय, थोड़ा है। यदि सब लोग केवल रोटी कमाने के लिए ही शारीरिक श्रम करें तो सभी को पर्याप्त भोजन और विश्राम मिल सकता है तब हमारी आवश्यकताऐं न्यूनतम रह जायेगी। शारीरिक श्रम से उपभोक्तावादी सस्कृति का पतन होगा। इस प्रकार औद्योगिककरण, मशीनीकरण तथा हिंसा में गिरावट आयेगी। गाँधी के श्रम चिंतन के अनुकरण से दुनिया आज की तुलना में सुखी, स्वस्थ और शान्ति पूर्ण बन सकती है। तब सम्पूर्ण पर्यावरण भी सन्तुलित एवं स्वस्थ होगा।

6. स्वदेशी चिन्तन में पर्यावरण चेतनाः गाँधी की इस धारणा को गीता के स्वधर्म तथा बाईबिल के 'पड़ोसी भाव' का आधार प्राप्त है। इसका अर्थ है व्यक्ति के समीपस्थ वातावरण के प्रति स्वधर्म। स्वदेशी एक व्यापक अवधारणा है जिसमें नैतिक, सामाजिक, अर्थशात्रीय, पर्यावणीय, राजनीतिक ,अध्यात्मिक आदि अर्थ समाविष्ट है। टॉलस्टाय का यह विचार कि हम एक–दूसरे के कधें पर चढ़ बैठे है दूसरे के कन्धे से उतर जाए तो ठीक है। गाँधी टालॅस्टाय के इस विचार से प्रभावित थे। गाँधी अपने स्वदेशी चितंन में स्थानीय चीजो को महत्व देते है। वे धार्मिक राजनीतिक,आर्थिक क्षेत्र में स्वदेशी वस्तुओं, विचारों ,मान्यताओं को अपनानेपर जोर देते थे। गाँधी का यह विचार सम्पूर्ण विश्व के लिए महत्वपूर्ण है क्योंकि ऐसा करने से केन्द्रीकरण, भूमण्डलीकरण, व्यावसायीकरण एवं औद्योगिककरण को बढ़ावा नहीं मिलेगा। जिससे समाज और पर्यावरण में विषमता तथा असन्तुलन उत्पन्न नहीं होगा।[16]

गाँधी ग्राम्य आधारित अर्थव्यवस्था चाहते थे, जो कुटीर तथा छोटे–छोटे उद्योगो पर आधारित है। गाँधी व्यक्ति को स्वावलम्बी एवं आत्मनिर्भर बनाने के लिये स्थानीय वस्तुए जैसे चरखा, खादी कें उपयोग पर बल देते है। वे विकेन्द्रीकरण एवं स्थानीयकरण चाहते थे। जिससे आर्थिक, सामाजिक,राजनीतिक, पर्यावरणीय समस्या उत्पन्न न हो। गाँधी के समस्त स्वदेशी चितंन में पर्यावरण चेतना के बीज बिखरे पड़े हुए है।

7. सर्वोदय चिन्तन में पर्यावरण चेतनाः समग्र विकास की परिकल्पना को सर्वोदय कहतें है। पर्यावरण दर्शन का आधार गाँधी जी के सर्वोदयी समाज के रूप में देखा जा सकता है, क्योकि गाँधी का सर्वोदयी समाज ही संपोष्य समाज (नेजंपदंइसम वबपमजल) है। गाँधी के सर्वोदय चिंतन में सतुंलित एवं सुस्थिर विकास की चिंता है। भारतीय सस्कृति में सम्पत्ति सब रघुपति के ऐही का आर्दश रहा है। गाँधी के समग्र विकास के सिद्धान्त में इसकी केन्द्रीय भूमिका है। उन्होंने अपने सर्वोदय सिद्धान्त में रस्किन की पुस्तक 'अंटू दिस लास्ट' के उस सूत्र को प्रमुखता दी है, जिसमें यह कहा गया है व्यष्टि का शुभ समष्टि के शुभ में निहित है। इसका अर्थ है समाज के हित में ही व्यक्ति का हित निहित है। सर्वोदय के साधन सत्य, अहिंसा अपरिग्रह, शारीरिकश्रम, अस्तेय, समभाव आदि है। गाँधी इस दृष्टिकोण के अर्न्तगत मशीनीकरण,औद्योगिककरण,केन्द्रीकरण एवं पाश्चात्य विकास नीतियों का विरोंध करते है। उनके अनुसार पाश्चात्य विकास मॉडल सामाजिक एवं पर्यावरण समस्याओं को उत्पन्न करता है। गाँधी विकास का जो मॉडल सर्वोदय के रूप में सुझाते है, उसमें स्वार्थ, हिंसा,

परावलम्बन एवं अभाव का कोई स्थान नहीं है। अतः स्पष्ट हो जाता है कि गाँधी मानव के साथ–साथ समग्र सृष्टि की चिन्ता करते है।[17]

निष्कर्ष– गाँधी का संपूर्ण जीवन और दर्शन पर्यावरणीय नैतिकता का पोषक है। आवश्यकताओं में कटौती, लोभ–लालच का त्याग, अपरिग्रह, ट्रस्टीशिप, कुटीर उद्योग, स्वावलम्बन, स्वदेशी, शारीरिकश्रम, सर्वोदय आदि के बारे में उनके विचार तथा प्रकृति के प्रति उनका असीम प्रेम ये सभी उनकी सूक्ष्म पर्यावरण–चेतना की ओर स्पष्ट संकेत करते है। वे उपभोक्तावादी संस्कृति के विरोधी थे। समग्र जीवन एवं सम्पूर्ण विश्व की चिंता की दृष्टि से ही गाँधी सादा जीवन, उच्च विचार को प्रमुखता प्रदान करते है। अतः गाँधी दर्शन को अपनाकर ही मनुष्य एवं मनुष्येत्तर जगत का भला हो सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. मिश्र हृदयनारायण, पारिस्थितिकी दर्शन, शेखर प्रकाशन, इलाहाबाद, 2006, पृष्ठ–146
2. वही ग्रन्थ, पृष्ठ–147
3. प्रभाकर विष्णु, गाँधी रामनाम की महिमा, हिन्दी साहित्य मन्दिर, अजमेर, 1961, पृष्ठ–75
4. मिश्र हृदयनारायण, पारिस्थितिकी दर्शन, शेखर प्रकाशन, इलाहाबाद, 2006, पृष्ठ–147
5. वही ग्रन्थ, पृष्ठ–158
6.सिंह, श्री भगवान, महात्मा गाँधी के चिंतन में तुलसीदास, बहुवचन, महात्मा गाँधी अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा, वर्ष 3, अंक 18, जनवरी–मार्च 2002, पृष्ठ–113।
7. गाँधी, हिन्द स्वराज्य, अनुवादक ठाकुरदास नाणावटी, सर्व सेवा संघ प्रकाशन, वाराणसी, 2006 पृष्ठ–52
8. गाँधी विचार, गाँधी विद्या संस्थान, जून–1996 अंक 2, पृष्ठ–11, 12
9. गाँधी विचार, गाँधी विद्या संस्थान, राजघाट वर्ष – 2, अंक 2, 1993, पृष्ठ–6
10. यंग इन्डिया, पत्रिका, (13 अक्टूबर 1921 टैगोर को उत्तर देते हुए)।
11. श्रीमन्नारायण, गाँधी की पुस्तक ग्राम–स्वराज्य के प्राक्कथन से, नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, अहमदाबाद, 2003, पृष्ठ–4, 5
12. शेखर सुधाशुँ, गाँधी विमर्श, दर्शना पब्लिकेशन, भागलपुर, बिहार, 2015, पृष्ठ–117
13. वही ग्रन्थ, पृष्ठ–117, 118
14. एपेक्स, आई0ए0एस0 एकेडमी, राजनीति विज्ञान, मुखर्जी नगर, दिल्ली स्थित संस्थान के नोट्स, पृष्ठ–227।
15. गाँधी, ग्राम–स्वराज, संग्राहक–हरिप्रसाद व्यास, नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, अहमदाबाद, 2013, पृष्ठ– 48
16. वही ग्रन्थ, पृष्ठ–40, 41
17. षेखर सुधाशुं, गाँधी विमर्श, दर्शना पब्लिकेशन भागलपुर, बिहार, 2015, पृष्ठ–122

तेजराम सिंह

शोध छात्र, राजनीति विज्ञान विभाग, हे.न.ब.ग.केन्द्रीय विश्वविद्यालय, श्रीनगर गढ़वाल, उत्तराखण्ड।

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- Google Scholar
- EBSCO
- DOAJ
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Indian Streams Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.isrj.org